अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद

कार्यालय – युवालोक, जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.)

E-mail : terapanthmedia@yahoo.co.in

महावीर को समझने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

महावीर जयंती पर विशेष कार्यक्रम आयोजित

बीदासर, 7 अप्रैल।

महावीर जयंती के अवसर तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अपने प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि विश्वविजेता की धारा को बपनाने वाले शस्त्रों का निर्माण कर रहे हैं। और कामवासना की पूर्ति के लिए बड़े–बड़े अपराध हो रहे हैं। आत्मविजेता की दूसरी धारा जहां शस्त्र नहीं चाहिए और अतिरिक्त धन भी नहीं चाहिए।

भगवान महावीर दूसरी धारा के आदमी थे जिन्होंने शस्त्र निर्माण का विरोध किया। शस्त्र का निर्माण है तो मनुष्य जाति सुख से नहीं रह सकती। इसलिए संयम करना सीखो, अहिंसा करना सीखो और जब तक मनुष्य काम वासना में लिप्त रहेगा तब तक सत्य का अनुभव नहीं करेगा। इसलिए वैराग्य का अनुभव करो। यह अहिंसा संयम, विरक्ति रूपी चाबी को हाथ में रखो। जिससे शांति का अनुभव कर सको। उन्होंने कहा कि वर्तमान दुनिया में भगवान महावीर प्रासंगिक नहीं है। क्योंकि वर्तमान में ज्यादा लोग धन, कामभोग में जा रहे हैं तो महावीर प्रासंगिक कैसे बनेंगे पर उलटकर देखता हूं तो वर्तमान की समस्या को सुलझाने के लिए महावीर जितने प्रासंगिक है उतने दूसरे लोग कम है। समस्या का समाधान न वैज्ञानिक दे रहा है न कोई दूसरा दे रहा है। वैज्ञानिक नई खोज कर रहे हैं। धर्म, अध्यात्म क्षेत्र में लोग ग्रन्थों में लिखे सत्य के सिवाय कोई नये सत्य की खोज नहीं कर रहें हैं, केवल शब्दों पर उलझ रहे है। कितना अच्छा हो कि दोनों में समन्वय हो जाए।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आज अपेक्षा इस बात की है कि महावीर को समझने का प्रयास करें। स्वयं सत्य खोजें। स्वयं सत्य को खोजने के लिए एकाग्रता, निर्विकल्प दशा में जाना होता है। मेरे मन में बहुत बार प्रश्न आता है कि हजारों वनस्पति है उनकी जो दशाएं है, प्रयोगशाला नहीं की कैसे पता चला, कैसे सैकड़ों, बीमारी को मिटाने के लिए कैसे धर्मों का विश्लेषण किया गया। धनवंतरी को अंतिन्द्रिय ज्ञान था। उन्होंने अतीन्द्रिय ज्ञान को देखा। जहां धनवंतरी जाते पेड़–पौधे, फूलों के सामने बैठ जाते।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि जब तक अतिन्द्रिय चेतना के जागरण का प्रयत्न नहीं होगा तब तक न वैज्ञानिक बन सकते हैं और न आध्यात्मिक बन सकते हैं। जातिवाद, साम्प्रदायवाद के विरुद्ध में सबसे ज्यादा प्रयत्न करने वाले दो व्यक्ति और महावीर और बुद्ध उनमें महावीर प्रथम है।

युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि बाल मजदूरी की बात आती है, महावीर जयंती पर हम इसको अहिंसा के सन्दर्भ में देखें। छोटे–छोटे दूध मूंह बच्चों को परिश्रम करना पड़ता है या बड़े लोगों के द्वारा छोटे–बच्चों से श्रम लिया जाता है। तो करुणा की कमी लगती है। उन्होंने सरकार से सीधा प्रश्न करते हुए कहा कि बाल मजदूरी का दूसरा

पहलू है कि बालकों को मजदूरी से जो मिलता है उससे उनके पेट की पूर्ति होती है, अगर बालश्रम न करे तो उनको भूखा सोना पड़ेगा। सरकार को इस पर चिंतन करना चाहिए, शासन की ऐसी व्यवस्था हो कि देश में बालक भूखा नहीं सोयेगा। जब ऐसी व्यवस्था होगी तभी बाल मजदूरी कम हो सकती है। इस व्यवस्था के अभाव में हम बाल मजदूरी न होने की बात करें और उससे भूखा सोना पड़े तो कौनसी अहिंसा की बात होगी।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि आज पानी की कितनी कमी हो रही है। पानी के संयम की भी अपेक्षा है। आतंकवाद की हिंसा बढ़ रही है। भगवान महावीर ने अहिंसा का संदेश दिया। विश्व के सामने हिंसा की समस्या है। कोई–कोई समस्या ऐसी होती है। राजनेता चिंतन भी करते हैं किस प्रकार आतंकवाद की समस्या का सामधान किया जा सकता है। आतंकवाद को भी कुछ सोचने को मिले कैसे मानव–मानव प्रेम मैत्री के साथ रह सके। मैत्री, अहिंसा के साये में अहिंसा के साथ जी सके।

युवाचार्यप्रवर ने आगे फरमाया कि भगवान महावीर ने सत्य का साक्षात्कार किया। जो अपने आप में महत्त्वपूर्ण बात हैं हम ग्रंथों पर ही न जाएं। ग्रंथों से भी कुछ आगे बढ़ने का प्रयास करें। भगवान महावीर की जयंती ऐसा अवसर है कि सभी साधु–साध्वियों को एक मंच पर आने का मौका मिलता है। भगवान महावीर जयंती एकता को पुष्ट करने का अवसर मिलता है। क्षमापना का जो कार्यक्रम है उसमें भी जैन धर्म के संप्रदाय साधु–साध्वियां एकत्रित होते हैं। वर्ष में दो अवसर ऐसे होते हैं। जैन शासन के पास शक्ति, समृद्धि निधि है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि महावीर हो, बुद्ध हो या दूसरे जितने भी संत मनिषी हुए हैं, उन्होंने अहिंसा का समता का, मैत्री उपदेश दिया। हम यह मानते हैं कि महावीर ने जो महत्त्वपूर्ण बात की उन्होंने अहिंसा, अनेकांत, अपिरग्रह की त्रिपदी का जो दर्शन दिया। ऐसा माना जाता है कि यह स्वस्थ समाज रचना की प्रक्रिया है। जिस समाज में अहिंसा अनेकांत और अपरिग्रह का दर्शन मान्य है वह समाज व्यवस्थित रहता है, संतुलित रहता है और विकास के पथ पर आगे बढ़ता है। आज हमारे देश में हिंसा की समस्या है। आतंकवाद की समस्या है। यह समस्या क्यों है? अगर महावीर के दर्शन को हम समझें तो हिंसा का मूल है परिग्रह। जब तक परिग्रह का जहां–जहां अतिभाव होगा वहां–वहां अभाव होगा, वहां हिंसा होगी इसलिए आवश्यक है कि महावीर के सिद्धांतों के अनुसार मनुष्य अपनी इच्छाओं का नियंत्रण करे, संग्रहवृति पर अंकुश लगाए अगर ऐसा होता है तो हिंसा की समस्या को पनपने का अवकाश नहीं मिलेगा।

''महावीर अष्टकम'' से प्रारंभ हुए महावीर जयंती समारोह में मुनिश्री सुखलालजी, मुनि कुमारश्रमणजी, साध्वी सुनंदाश्रीजी, साध्वी कल्पनाश्रीजी, मुमुक्षु समता ने महावीर के जीवन दर्शन एवं उनके क्रांतिकारी सिद्धांतों पर प्रकाश डाला। मुनि श्रेयांसकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, श्री दीलीप डागा, श्री कमल पटावरी, श्रीमती मंजू बैंगानी, श्रीमती बरखा पुगलिया, स्थानी तेरापंथ कन्यामण्डल, महिला मण्डल ने गीतों के द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

---

30 अप्रैल को होगा दीक्षा समारोह

बीदासर, 7 अप्रैल।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने 30 अप्रैल को जैन विश्व भारती लाडनूं में चतुर्मास प्रवेश के अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन दीक्षा समारोह के आयोजन की घोषणा की। उन्होंने कहा कि दीक्षा समारोह में समणी उज्जवलप्रज्ञा – हांसी, समणी मननप्रज्ञा – आसोतरा, समणी विशालप्रज्ञा – सरदारशहर को साध्वी दीक्षा दी जायेगी।

रशियन बालक ने की दीक्षा की अर्ज

पीछले 25 दिनों से आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में अपने माता–पिता के साथ रह रहे रूस निवासी 11 वर्षीय मार्क ने महावीर जयंती समारोह में हिन्दी में भाषण देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ से जैन दीक्षा देने का अनुरोध किया। पूरे दिन जैन मुनि की तरह मुंह पट्टी बांधकर रखने वाले इस बालक को जब रसिया जाने का कहा जाता है तो वह वहां जाने से मना कर देता है और मुनि बनने की इच्छा जाहिर करता है। उल्लेखनीय है कि मार्क प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ व युवाचार्यश्री महाश्रमणजी एवं मुनिजनों से अध्यात्म एवं जैन मुनिचर्या की जानकारी प्राप्त करने के साथ हिन्दी भी सीख चुका है।

अमरिकन छात्रों ने लिया मार्गदर्शन

अमेरिकन छात्रों के एक दल ने प्रेक्षाध्यान एवं जैन धर्म को जानने के लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। यह दल भारत में अपने तीन महीनों के प्रवास के दौरान भारतीय संस्कृति एवं हिन्दी एवं हिन्दी का अध्ययन करेगा। मुनिश्री किशनलालजी ने प्रेक्षाध्यान का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। छात्र–छात्राओं ने जब बालमुनियों से बातचीत की तो अभिभूत हो गये।

हरियाणा मंत्री सावित्री जिंदल ने लिया आशीर्वाद

जिंदल इंडस्ट्री की प्रमुख एवं हरियाणा सरकार की शहरी विकास मंत्री सावित्रीदेवी जिंदल एवं समाजसेवी जगदीश मित्तल ने प्रवचन के पश्चात आचार्यप्रवर, युवाचार्यप्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। चुनाव को देखते हुए इन दिनों बीदासर में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से जीतने का गुरु मंत्र लेने के लिए कांग्रेस, भाजपा एवं अन्य दलों के नेताओं की आवाजाही बढ़ी हुई है।

इस मौके पर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कहा कि जीवन को केवल आर्थिक राजनीतिक ही नहीं बनाता है। जहां एक ही पक्ष होता है वहां शांति नहीं होती। आध्यात्मिक को अपनाकर जीवन में संतुलन बनाना जरूरी है।

महावीर जागरिका रैली निकाली

बीदासर, 7 अप्रैल।

स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में मंगलवार को महावीर जयंती के उपलक्ष में कस्बे के मुख्य मार्गों से विशाल महावीर जागरिका रैली निकाली गई। रैली प्रातः 7.30 बजे साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के प्रवास स्थल थान–सुथान से शुरू होकर चौरड़िया चौक, निमड़ा उपाश्रा, पुराना बाजार, गांधी चौक, प्रताप चौक होते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवास स्थल तेरापंथ भवन में पहुंच कर धर्मसभा के रूप में प्रवृर्तित हो गई। रैली में सैकड़ों महिलाओं व कन्याओं तथा जैन समाज के सभी लोगों ने भाग लिया।

– अषोक सियोल
99829 03770